राष्ट्रीय फैशन प्राद्यौगिकी संस्थान

फील्ड स्टडी

"सिगोडी–कपास हथकरघा क्लस्टर"

प्रियांशु रंजन

अभिषेक कुमार रॉय

किंशुक

कुमार आदित्य देव

शुभ्रांशु भूषण

अंकित राज

प्रमाण-पत्र

“यह प्रमाणित किया जाता है कि “ सिगोडी–कपास हथकरघा क्लस्टर” पर यह विवरण ,प्रियांशु रंजन,अभिषेक कुमार रॉय,किंशुक,कुमार आदित्य देव ,शुभ्रांशु भूषण और अंकित राज के द्वारा किये गये मूल शोध पर आधारित है | यह परियोजना श्री अभय कुमार के मार्गदर्शन में राष्ट्रीय फैशन प्राद्यौगिकी संस्थान के फील्ड स्टडी के पाठ्यक्रम की आंशिक पूर्ती के लिए पूरी कि गयी है |

इस रिपोर्ट का कोई भी अंश कहीं से भी कॉपी नही किया गया है और जहाँ पर भी ऐसा हुआ है ,उसे विधिवत स्वीकार किया गया है |”

दिनांक : 08/05/2017

प्रियांशु रंजन

अभिषेक कुमार रॉय

किंशुक

शुभ्रांशु भूषण

अंकित राज

अभय कुमार

सह-प्राध्यापक

फैशन प्राद्यौगिकी विभाग

निफ्ट –पटना

अभिस्वीकृति

हम सिगोडी -कपास हथकरघा क्लस्टर पर परियोजना करने का अवसर प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान का शुक्रिया अदा करना चाहते हैं।

सर्व प्रथम , हम पूरे सत्र में इस परियोजना पर अपने अमूल्य प्रतिक्रिया और मार्गदर्शन के लिए अपने विषय अध्यापक श्री अभय कुमार और हमारे पाठ्यक्रम समन्वयक – श्री पवित्तर पुनीत सिंह मदन का शुक्रिया अदा करना चाहते हैं। यह उनके समर्थन के बिना हासिल नहीं हो सकता था।

हम इस परियोजना की सफलता के लिए श्री मंसूर अंसारी, जो एक बुनकर हैं ,जिन से हम सिगोडी में मिले थे, के सतत समर्थन के लिए धन्यवाद देते हैं।

अंत में, हम उन सभी लोगों का धन्यवाद करने का अवसर लेते हैं, जो कि इस पूरी प्रक्रिया, के मार्गदर्शन में शामिल थे और जिन्होंने हमें आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान किए हैं जिसके कारण यह रिपोर्ट पूरा हो सका है।

प्रियांशु रंजन

अभिषेक कुमार रॉय

कुमार आदित्य देव

किंशुक

शुभ्रांशु भूषण

अंकित राज

विषय-सूची

क्र सं	विषय	पृष्ठ सं
	प्रमाण पत्र	
	अभिस्वीकृति	
1.0	**सीगोडी –हथकरघों का गाँव**	**1-7**
1.1	संक्षिप्त परिचय	1-3
1.2	हथकरघा उद्योग-एक परिचय	4-5
1.3	अध्ययन का उद्देश्य	6
1.4	अध्ययन विधि	6
1.5	अध्ययन क्षेत्र	7
2.0	**क्लस्टर-स्तरीय रिपोर्ट**	8 -26
2.1	स्थान का विवरण	8-9
2.2	इकाइयों का जन्सांख्यिकीय विभाजन	10-11
2.3	अर्थव्यवस्था	12
2.4	परिवहन	13
2.5	उत्पाद एवं प्रक्रिया	14-26
3.0	**क्लस्टर का विस्तृत विवरण**	**27-33**
3.1	मूल्य -श्रंखला विश्लेषण	27

3.2	पेस्टल विश्लेषण	28-29
3.3	स्वॉट विश्लेषण	30-31
3.4	समस्या और समाधान	32-33
	अनुबंध	**34-41**
I	प्रश्नावली	34-37
II	बुनकरों का पार्श्वचित्र	38-39
III	सिगोड़ी के मैक्रो पर्यावरण का मॉडल	40
IV	सिगोड़ी के सड़क दृश्य का मॉडल	41

सीगोडी –हथकरघों का गाँव

1.0 संक्षिप्त परिचय

सिगोडी बिहार राज्य के पटना जिला में स्थित एक छोटा सा गाँव है। यह पुनपुन नदी के किनारे बसा हुआ है।यह कपास हथकरघा क्लस्टर के लिए विख्यात है।यह बुनकरों का केंद्र है।इस गाँव के हर घर में करघा है।यहाँ के बुनकर पारंपरिक पिट लूम कि मदद से बुनाई का काम करते हैं और उन्हें इस कला में महारत हासिल है। यहाँ विविध प्रकार जे कपडे बनाए जाते हैं।
यहाँ बनने वाली चीज़ों में कपास का गमछा ,लुंगी ,चादर आदि शामिल है।

चित्र-1(क) – सिगोडी बस स्टैंड रोड

चित्र 1 (ख)- सिगोडी के बुनकर

चित्र 1 (ग)- उच्च विद्यालय सिगोडी

1.2 हथकरघा उद्योग-एक परिचय

वस्त्र ,जो कि रोटी और मकान के बाद सबसे जरुरी बुनियादी आवश्यकता है,आज सबके लिए सर्वोच्च प्राथमिकता है।

19 वीं शताब्दी तक हथकरघा क्षेत्र हमारे देश कि पूरी आबादी के लिए कपड़े का एक मात्र आपूर्तिकर्ता था ।बुनाई मानव समाज कि बुनियादी गतिविधि थी जिसमे उपयोगिता और सौंदर्य मिश्रित थे ।भारत में हथकरघा उद्योग 3 विशिष्ट क्षेत्रों के अंतरहत संचालित होते हैं –

- स्वतंत्र बुनकर
- मास्टर बुनकर
- सहकारी समितियां

हथकरघे के द्वारा बुनाई काफी हद तक विकेन्द्रित है और बुनकर मुख्य रूप से समाज के कमज़ोर वर्गों से हैं जो अपने घरेलू जरुरत के लिए बुनाई करते हैं। हथकरघा से प्राप्त वस्त्रों में हासिल की गई कलात्मकता और जटिलता का स्तर अद्वितीय है और कुछ डिजाइन अब भी आधुनिक मशीनों के दायरे से परे हैं। हथकरघा

चित्र 1 (घ)- हथकरघा

क्षेत्र अति उत्तम वस्त्र जिन्हें बनाए में महीनों लग जाते हैं, से लेकर हर प्रकार की जरूरतों को पूरा कर सकता है।

वार्षिक हथकरघा उत्पाद और निर्यात :-

वर्ष	हथकरघा वस्त्र उत्पाद (मिलियन वर्ग मीटर में)	हस्तकरघा निर्यात (करोड़ रूपए में)
2007-08	6947	अनुपलब्ध
2008-09	6677	अनुपलब्ध
2009-10	6806	1252
2010-11	6907	1575
2011-12	6901	2624
2012-13	6952	2812
2013-14	7104	2233
2014-15	7203	2246

(स्रोत: वस्त्र आयुक्त कार्यालय एवं एचइपीसी)

घटनाक्रम

भारत सरकार ने हथकरघा क्षेत्र के विकास के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं ।इनमें से कुछ योजनाएं हैं –

- टेक्नोलॉजी अपग्रेडेशन फंड
- एकीकृत हथकरघा विकास योजना
- मिल गेट योजना

- इसके साथ ही भारत सरकार ने 1 अगस्त को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के रूप में मनानें का निर्णय लिया है।

1.3 अध्ययन का उद्देश्य

- उत्पाद और संचार से संबंधित शुक्ष्म वातावरण में भागों अवं प्रक्रियाओं कि जांच।
- एक समकालीन और ऐतिहासिक संदर्भ में विशिष्ट शुक्ष्म वातावरण के संरचनात्मक ज्ञान को समझने के लिए।
- प्रकृति (संरचना), उद्देश्य (कार्य), प्रक्रियाओं (सामग्री और प्रौद्योगिकी) और विनिमय संबंधों (व्यापार, वितरण, उपभोग) के दृष्टिकोण से सूक्ष्म पर्यावरण की अवधारणा की जांच करना।
- टीमवर्क की भावना को बढ़ाना और गहन अध्ययन के लिए व्यक्तिगत योगदान को अधिकतम करने के लिए।

1.4 अध्ययन विधि

अध्ययन को विभिन्न चरणों में विभाजित किया गया है।

- अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार, पहले चरण में, बुनकरों और क्लस्टर के विभिन्न हितधारकों के साथ गहन बातचीत / साक्षात्कार के माध्यम से प्राथमिक आंकड़े एकत्रित किये गये हैं।
- सहायक आंकड़ों को विभिन्न सरकारी जनगणना प्रकाशन रिपोर्ट ,वार्षिक रिपोर्ट ,पुस्तक आदि से एकत्रित किया गया है।
- एकत्रित किये गए विभिन्न आंकड़ो और सूचनाओं का विश्लेषण विभिन्न प्रकार के माध्यम से करना।
- वर्त्तमान परिदृश्य का अध्ययन और मौजूदा समस्याओं और अंतरालों का पहचान करना।
- पहचाने गये समस्याओं को दूर करने के लिए आवश्यक प्रस्ताव दिए गये हैं।

1.5 अध्ययन क्षेत्र

यह अध्ययन क्लस्टर के बारे में बुनियादी जानकारी, क्लस्टर उत्पाद, मौजूदा तकनीक का इस्तेमाल, वर्तमान कार्यशाला , सूक्ष्म और छोटी इकाइयों की संख्या, साथ ही साथ औसत निवेश, रोजगार का स्तर, प्रौद्योगिकी के स्तर, और साथ ही सटीक स्थान प्राप्त करने में मदद करेगा।

क्लस्टर कि जनसांख्यिकी के साथ सूक्ष्म अवं मैक्रो पर्यावरण का भी मूल्यांकन किया जाएगा।

क्लस्टर-स्तरीय रिपोर्ट

2.1 स्थान का विवरण

तथ्य

- **स्थान :** पटना जिले के पालीगंज ब्लॉक में
- **पंचायत :** सिगोडी
- **गाँव की संख्या :**4(जानपुर,नरौली ,हदीनगर ,कनौरा)
- **वार्डों कि संख्या :** 18
- **क्षेत्रफल :** 1646 एकड़ (6.661126 वर्ग-किलोमीटर)
- **जनसंख्या(2011 जनगणना) :** 14627

इतिहास

स्वतंत्रता से पूर्व सिगोड़ी जानपुर गाँव का एक टोला था ।उस समय यहाँ कि आबादी बहुत ही कम थी।

जानपुर के ज़मींदारों ने गाँव में कब्रिस्तान के लिए ज़मीन का पड़ा टुकड़ा दान किया जो कि शायद गाँव का सबसे बड़ा भूखंड है ।स्वतंत्रता के पश्चात दंगों के कारण ज्यादातर मुस्लिम आबादी सिगोरी में आ कर बस गई।

सिगोड़ी के बुनकर बहुत लम्बे समय से बुनाई का काम कर रहे हैं। यह कौशल उनहोंने अपने बड़े-बुजुर्गों से सिखा है।

स्थान

सिगोड़ी बिहार के पटना जिले में पुनपुन नदी के किनारे स्थित है ।यह पूर्व दिशा में पुनपुन,महाराजगंज ,हदीनगर और शिया बीघा से घिरा हुआ है ।इसके पश्चिम में जानपुर,मखदुमचक ,बिवीपुर और निझरा स्थित है। उत्तर में पतरिंगा ,चखर्दह एवं गोपीपुर और दक्षिण में भिन्नकबिघा ,नरौली और नोनियाचक से घिरा हुआ है ।

सिगोड़ी के अक्षांश और देशांतर क्रमशः 25.2949° N और 84.8946°E हैं ।सिगोड़ी समुद्र स्तर से 66 मीटर ऊपर स्थित है।

जलवायु

सिगोड़ी कि जलवायु गर्म उपोष्णकटिबंधीय है ।मार्च के अंत से लेकर जून के प्रारंभ तक यहाँ गर्मी रहती है ।जून के अंत से सितम्बर के अंत तक मॉनसून और नवम्बर से फरवरी तक ठण्ड का मौसम रहता है।

2.2 इकाइयों का जनसांख्यिकीय विभाजन

जनसांख्यिकी

2011 के जनगणना के अनुसार सिगोड़ी कि आबादी 14,627 है। यह पटना जिले कि जनसँख्या का 0.25 % है। यहाँ पुरुष आबादी 7380 है और महिला आबादी 7247 है।यहाँ का लिंगानुपात प्रति 1000 पुरुष के लिए 982 महिलाएं हैं।यहाँ कि साक्षरता दर 52.30% है।सिगोड़ी में बहुसंख्य आबादी मुस्लिमों कि है।यहाँ कुछ हिन्दू परिवार भी रहते हैं।

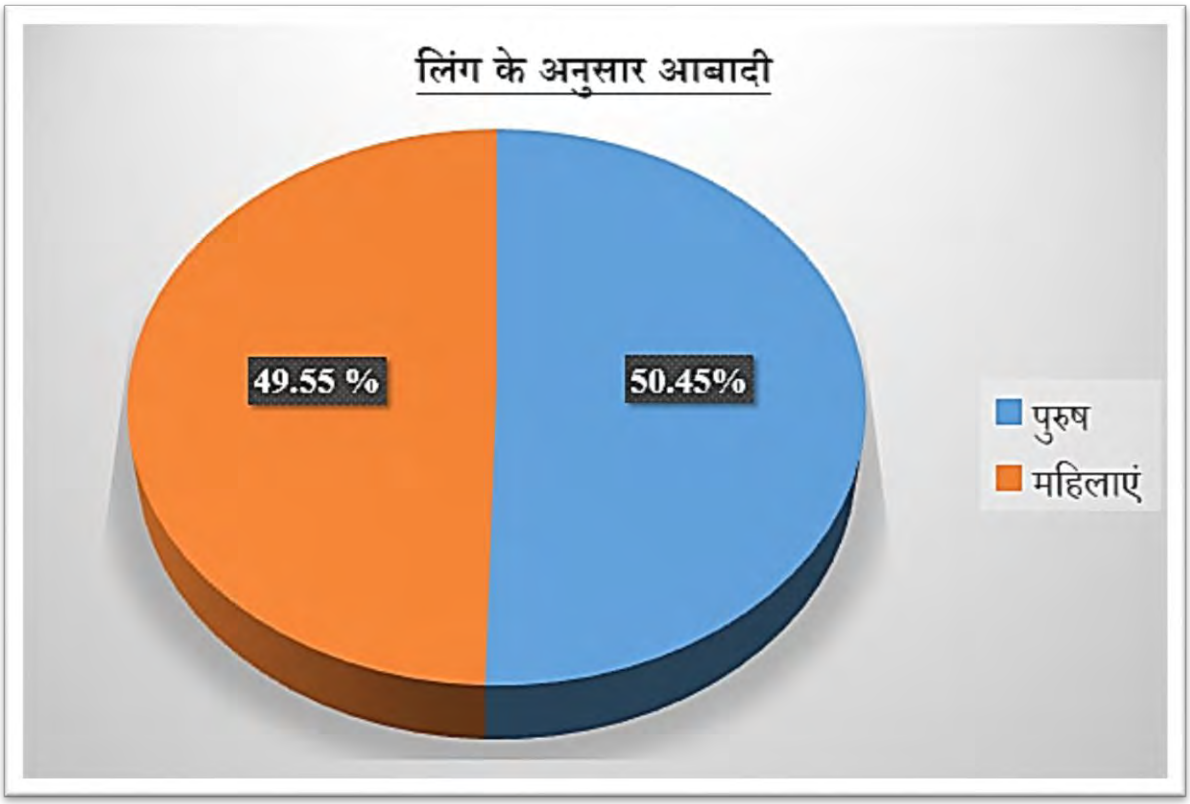

चित्र -2 (क)

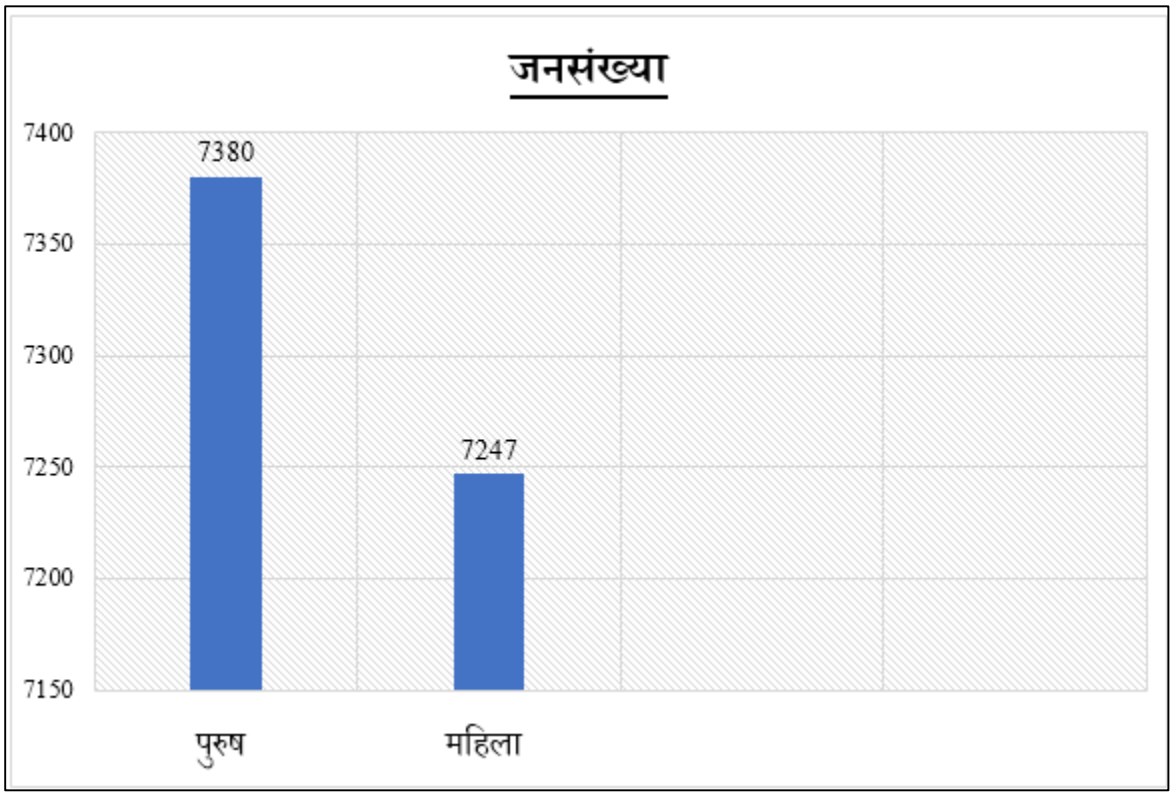

चित्र -2 (ख)

अर्थव्यवस्था

सिगोरी की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से बुनाई और उस से संबंधित गतिविधियों पर निर्भेर है। बुनकर मांग के अनुसार उत्पादन करते हैं और फिर उसे स्थानीय बाज़ार में या किसी व्यापारी या वितरक को बेचते हैं। कुछ लोगों के पास कृषि भूमि भी है जहां वे खेती करते हैं।

चित्र- 2(ग)-सिगोरी की अर्थव्यवस्था हथकरघे पर निर्भर

परिवहन

सिगोड़ी पटना से 50.9 किलोमीटर कि दूरी पर स्थित है। यह एनएच -139 ,मसौढ़ी –पटना मार्ग और एसएच -1 के माध्यम से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है।पटना से सिगोड़ी के लिए बस सेवा नियमित अंतराल पर उपलब्ध है। यहाँ से निकटतम रेलवे स्टेशन मसौढ़ी है।

2.5 उत्पाद एवं प्रक्रिया

क्लस्टर उत्पाद

चित्र -2(ड़)(लुंगी)

चित्र 2 (च)-रुमाल

चित्र 2(छ)-गमछा

चित्र 2(ज)-चादर

प्रक्रिया

कच्चा माल मंगाना

↓

पूर्व करघा

चावल और मैदे को ताना धागे पर लगाया जाता है।

↓

रंगाई

कृत्रिम या प्राकृतिक रंग से धागे को रंगना ।महंगे कपास के लिए नैप्थोल रंग का इस्तेमाल किया जाता है ।डायरेक्ट /सल्फर और एसिड रंगों का भी इस्तेमाल होता है।

↓

करघे को स्थापित करना

करघा 4 बीम कि एक फ्रेम का बना होता है। यह कई प्रकार का हो सकता है ।सिगोरी में मुख्या रूप से पिट लूम का इस्तेमाल किया जाता है।

↓

ताना सेट करना

ताना धागों को शीर्ष बीम पैर फैला कर क्षैतिज बीम के निचे पारित किया जाता है।इस प्रक्रिया को दोहराया जाता है।

↓

भरनी

बुनाई कि हर पंक्ति के बाद ताने के माध्यम से एक बाने (एकांतर से ऊपर और नीचे) को गुजारा जाता है और एक कंघी के द्वारा बुने के खिलाफ प्रेस किया जाता है।

कपास

कपास के धागे को बंडल के हिसाब से मानपुर (गया) ,कोल्कता ,आंध्र-प्रदेश,ओडिशा से मंगवाया जाता है ।यह विभिन्न काउंट में उपलब्ध है जो इसके बारीकी को वर्णित करते हैं।

काउंट	*दाम (प्रति बंडल)
80s	1200 रुपये /-
40s	1150 रुपये /-
32s	1060 रुपये /-
20s	900 रुपये /-
10s	500 रुपये /-

* यहाँ वर्णित आंकड़े बुनकरों द्वारा वर्णित है।

करघे से पूर्व कि प्रक्रिया

इसमें साइजिंग प्रकिया शामिल है जिसमें ताना को ताकत प्रदान करने के लिए उसपर चावल के स्टार्च (माड़) अथवा मैदा का लेप लगाया जाता है। 1 बंडल धागे के लिए लगभग आधा किलो चावल को उबला जाता है

चित्र 2 (झ)-साइजिंग लेप बनाने कि तैयारी

रंगाई

धागे को रंगने का काम रंगरेज़ या स्वयं बुनकरों द्वारा किया जाता है ।वे क्लेडन अथवा नैप्थल रंग का इस्तेमाल करते हैं ।रंगों के अनुसार रंगाई या तो उबलते पानी में या फिर ठंडे पानी में किया जाता है ।

उदहारण के लिए ,काला रंग उबलते पानी में प्रयोग किया जाता है । लाल ,पीला आदि दुसरे रंग ठाणे पानी में प्रयोग होते हैं ।

चित्र 2 (ञ)-रंगाई से पहले धागे के लच्छे को धोने की प्रक्रिया

चित्र 2 (ट)-रंगाई कि प्रक्रिया

चित्र 2 (ठ)-रंगाई कि प्रक्रिया

करघा सेट करना

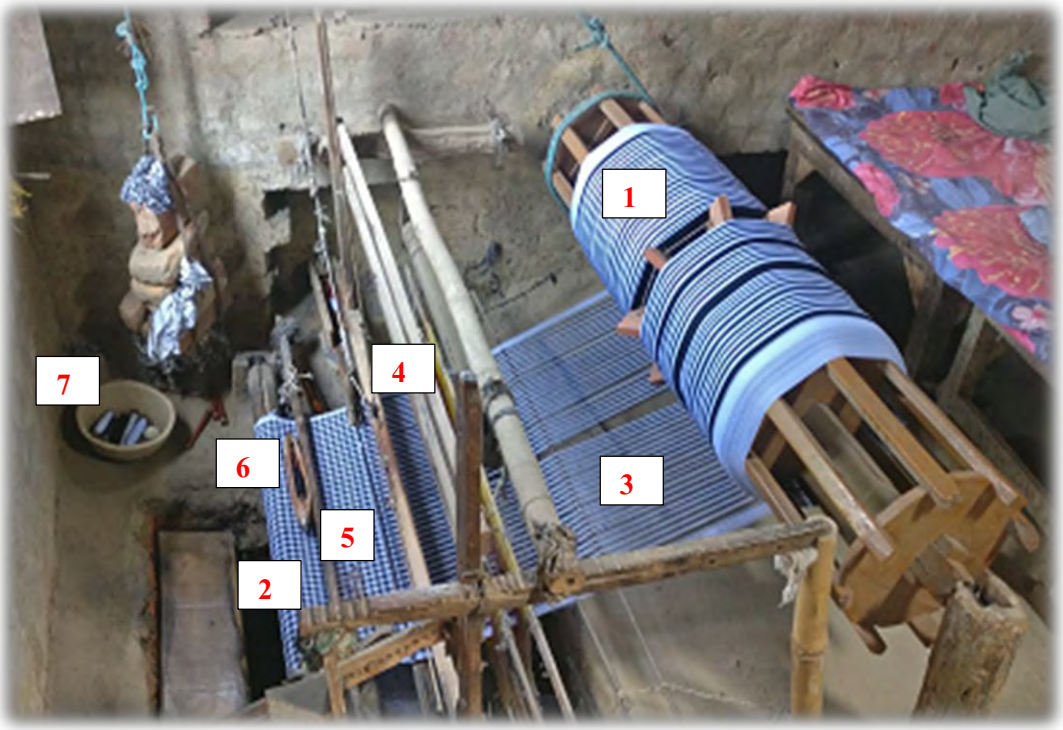

चित्र 2(ड)-करघे के हिस्से

1. वार्पर
2. कपड़े का रोलर
3. ताना
4. हील्ड
5. रीड
6. शटल
7. अटेरन /रील

<u>ताना सेट करना</u>

चित्र 2(ढ)-ताना सेट करने कि प्रक्रिया

चित्र 2(ण)-बीम व रील

भरनी

चित्र 2(त)-भरनी कि प्रक्रिया

3.1 मूल्य –श्रृंखला विश्लेषण

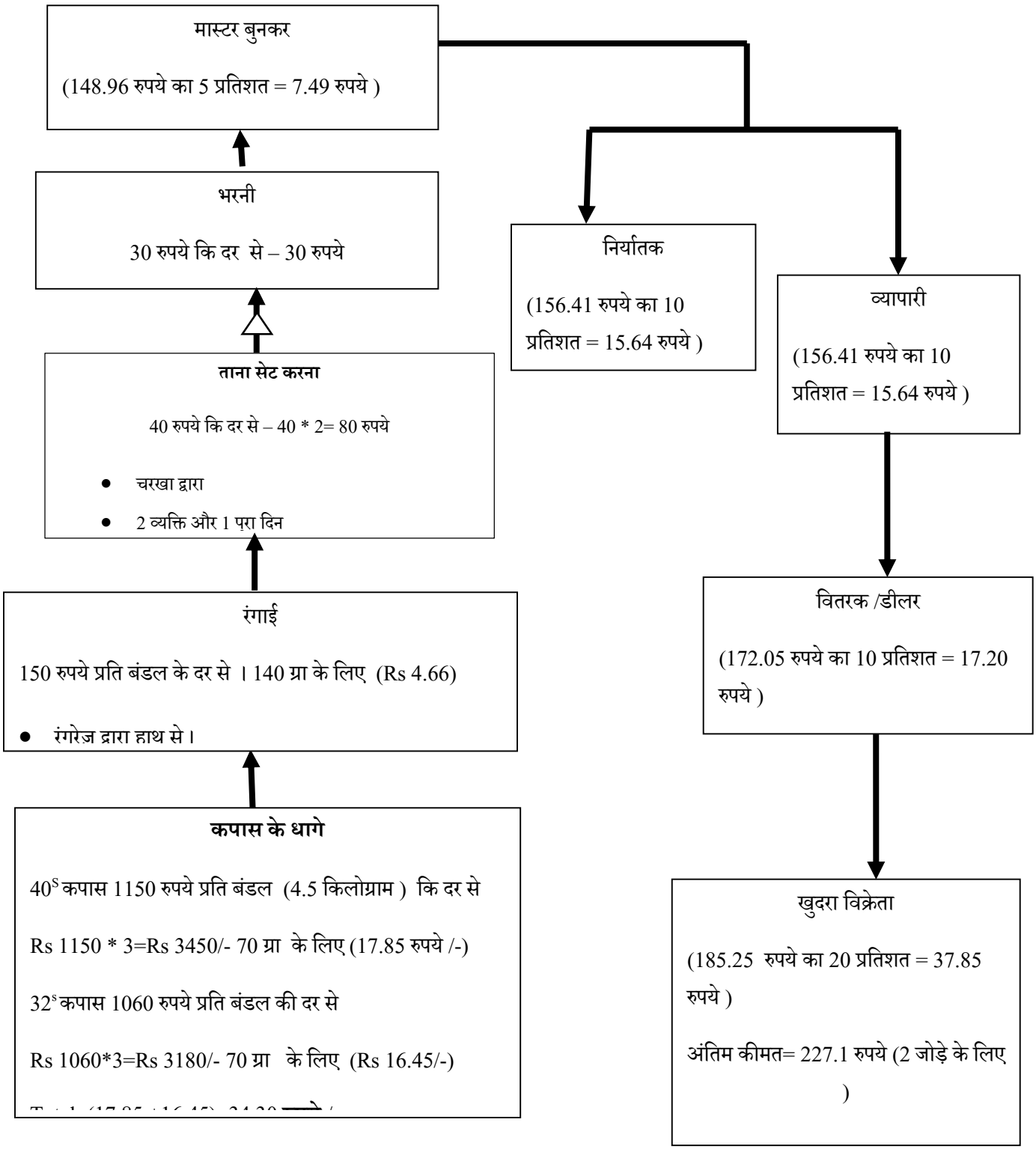

3.1 पेस्टल विश्लेषण

- ❖ राजनीतिक कारक
- ❖ आर्थिक कारक
- ❖ सामाजिक कारक
- ❖ तकनीकी कारक
- ❖ कानूनी कारक
- ❖ पर्यावरणीय कारक

राजनितिक कारक

सिगोड़ी पटना जिले में है जो कि बिहार कि राजधानी है ।ये इसे राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र बनाती है ।यहाँ लगभग 10000 मतदाता हैं। सिगोरी में कुल 19 वार्ड हैं।

आर्थिक कारक

2011 कि जनगणना के अनुसार ,सिगोड़ी कि कुल कामकाजी आबादी 3869 है। बुनाई यहाँ कि आजीविका का मुख्य श्रोत है।

सामाजिक कारक

सिगोड़ी के अधिकांश लोग मुस्लिम समुदाय से हैं ।वे सामाजिक रूप से पिछड़े हुए हैं ।गाँव की युवा पीढ़ी कम मजदूरी और अनियमित काम के कारण बनाई में दिलचस्पी नहीं ले रही है।इस कारण उनमें से अधिकांश काम कि तलाश में शहर के लिए पलायन करते हैं।

तकनीकी कारक

1990 में सिगोड़ी में पॉवर लूम थे। लेकिन 1990 के बाद गाँव में बिजली आपूर्ति बंद कर दी गई जिसके परिणामस्वरूप पॉवर लूम का परिचालन बंद हो गया।

कानूनी कारक

सिगोड़ी में बुनकरों का पंजीकरण हुआ है और जिला उद्योग केंद्र (पटना)व विकास आयुक्त (हथकरघा),वस्त्र मंत्रालय द्वारा बुनकरों को फोटो पहचान पत्र प्रदान किया गया है।

पर्यावरणीय कारक

केवल कपास के धागों का इस्तेमाल करने के कारण बुनाई से उत्पन्न अवशिष्ट और अपव्यय बायो-डिग्रेडेबल हैं।रंगाई से उत्पन्न अवशेषों में ज़हरीले रसायन होते हैं जो मिट्टी को प्रदूषित करते हैं।

3.2 स्वॉट विश्लेषण

➢ ताकत

- कुशल हथकरघा बुनकरों कि उपलब्धता।
- बिहार और अन्य राज्य में मूल्यवर्धित हथकरघा उत्पादों कि उच्च मांग।
- हथकरघा क्षेत्र में विकास के लिए सरकार कि अनेकों योजनाएं अवं नीतिगत निर्णय।
- बुनकरों द्वारा हथकरघा और इसकी विविधता अपना के और अपनी बहुमुखी प्रतिभा का इतेमाल करके जटिल वस्त्र निर्माण करने की योग्यता।
- पर्यावरण को कोई खतरा नहीं।
- कम निवेश कि जरुरत।

➢ कमज़ोरी

- सिगोड़ी में अपर्याप्त अवसंरचनात्मक सुविधाएं।
- अप्रचलित डिजाइन / रंग।
- कम क्रेडिट।
- उन्नत तकनीक का अभाव।
- मुद्रण व रंगाई कि उचित सुविधा कि अनुपलब्धता।
- बुनकर गाँव में फैले हुए हैं जिससे समन्वय में समस्या आती है।
- कीमत और उत्पादकता के मामले में पॉवर लूम सेक्टर के साथ प्रतिस्पर्धा करने में असक्षमता।
- अनुचित कार्यस्थल

➢ अवसर

- कपास हथकरघा उत्पादों के लिए बहुत अच्छी संभावनाएं।
- उत्पाद में विविधता ,जैसे –गमछा,रुमाल,लुंगी,चादर आदि।
- सरकार द्वारा प्रस्तुत विभिन्न योजनाएं और कौशल विकास कार्यक्रम।
- सर्कार द्वारा आयोजित हथकरघा/हस्तकला मेला।

➢ ख़तरा

- सिंथेटिक कपड़ों से ख़तरा।
- पॉवर-लूम सेक्टर के साथ प्रतिस्पर्धा।
- अपर्याप्त काम और कम मजदूरी के कारण बुनकर अब अन्य व्यवसाय चुन रहे हैं।

3.3 समस्या एवं समाधान

❖ **समस्या 1 :** कम उत्पादकता।

समाधान : हथकरघा के बजाय पॉवर-लूम का इस्तेमाल करने से उत्पादकता 4 गुना बधाई जा सकती है ।यह समय बचा सकता है।

❖ **समस्या 2 :** बिचौलियों द्वारा बुनकरों के मुनाफे का एक बड़ा हिस्सा ले लिया जाता है।

समाधान : बुनकरों द्वारा अपने उत्पाद सीधा ग्राहकों को बेचने के लिए सरकार द्वारा हस्तक्षेप कि आवश्यकता है।

❖ **समस्या 3 :** कच्चे छत और अनुचित कार्यशाला के कारण मानसून में काम बंद हो जाता है ।

समाधान : बुनकरों को उचित कार्यशाला प्रदान की जानी चाहिए ताकि प्राकृतिक कारणों के कारण काम बंद न हो।

❖ **समस्या 5 :**मंद रौशनी में निरंतर कार्य करने के कारण बुनकरों कि दृष्टि में समस्याएं उत्पन्न हो रही है।

समाधान : कार्यस्थल में उचित प्रकाश कि व्यवस्था स्थापित कि जानी चाहिए ताकि दृशी में किसी प्रकार का तनाव न हो। सरकार सौर-उर्जा स्थापित कर सकती है क्यूंकि गाँव में सूर्य के प्रकाश से बिजली पैदा करने कि उच्च क्षमता है।

❖ **समस्या 6 :** कच्चे माल का महंगा होना ।

समाधान : सरकारी हस्तक्षेप कि आवश्यकता है ताकि कच्चा माल उचित कीमत पर उपलब्ध हो सके ।

❖ **समस्या 7 :** बुनकर उनके लिए बनाई गयी विभिन्न सरकारी योजनाओं से अनजान हैं।

समाधान : विभिन्न योजनाओं ,नीतियों और उनके लाभिओं के बारे में बुनकरों को सूचित करने के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाना चाहिए ।

❖ **समस्या 8 :** ज्यादातर बुनकर क़र्ज़ के जाल में फंसे हुए हैं।

समाधान : बुनकरों के क़र्ज़ माफ़ होना चाहिए।इसके लिए सरकारी हस्तक्षेप कि आवश्यकता है।

अनुबंध

I.प्रश्नावली

नाम :	स्थान :
उम्र :	शिक्षा:
विवाहित :	परिवार के सदस्यों कि संख्या :
मासिक आय :	बुने के मूल्य श्रृंखला में काम :

- क्या यह आपका पारंपरिक व्यवसाय है ?

  _____

- यह काम करने के लिए क्या सामग्रियां आवश्यक है ?

  _____

- आप इन सामग्रियों को कहाँ से प्राप्त करते हैं ?

  _____

- आप किन उपकरणों का उपयोग करते हैं ?

_____

- इस काम को करने के बुनियादी तरीकें क्या हैं ?

_____

- आप कौन सी वस्तुओं का उत्पादन करते हैं ?

_____

- एक विशीष्ट उत्पाद बनाने में कितना समय लगता है ?

_____

आपके द्वारा इस काम में शामिल किये गये नयें उपकरण कौन-कौन से हैं ?

S.NO	ACTIVITY	TOOLS
1.	करघे से पूर्व के काम	
2.	बुनाई	
3.	फिनिशिंग	
4.	बिक्री	
5.	अन्य	

- नए तकनीकों को अपनाने में आपको किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है ?

बाधा	स्थान
उपयोगिता के बारे में ज्ञान की कमी	
पूंजी का अभाव	
उपकरणों का डिजाइन	
स्थान /बुनियादी सुविधाओं/उर्जा का अभाव	
प्रशिक्षण कि कमी	

- आर्थिक समस्याओं के अलावा बुनाई के कम से स्थानांतरण के कारण क्या हैं ?

कारण	स्थान
असुरक्षित भविष्य	
विकास का अभाव	
पेशे में प्रतिष्ठा की कमी	

प्रतिकूल मैक्रो पर्यावरण	
सरकारी सहयोग कि कमी .	

- काम से स्तर पर किन 3 सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों को सुधारना होगा ?

1._____
2._____
3._____

II.बुनकरों का पार्श्वचित्र

क्र.सं.	नाम	फोटो
1	मंसूर अंसारी	
2.	शाह उमैर	
3.	शेराजू अहमद	
4.	रियाज़ अहमद	
5.	खुर्शीदा परवीन	———
6.	मोहम्मद सैदुल्लाह अंसारी	

7.	मोहम्मद सलीम	
8.	मैहर-उन-निशा	
9.	गुड्डू	
10.	शेहनाज़ बानो	_____

III .सिगोड़ी के मैक्रो पर्यावरण का मॉडल

IV.सिगोड़ी के सड़क दृश्य का मॉडल